



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नेट— ब्यूरो

Code No. : 43

विषय: राजस्थानी

पाठ्यक्रम

इकाई— 1. राजस्थानी भाषा – उद्भव, विकास, एवं बोलियां

- i. राजस्थानी भाषा का उद्भव, विकास एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के सन्दर्भ में
- ii. राजस्थानी भाषा की प्रमुख बोलियां एवं उनका क्षेत्र— मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती, डूंगाड़ी, बागड़ी, मेवाती एवं मालवी
- iii. राजस्थानी लिपि – मुड़िया (महाजनी)
- iv. राजस्थानी काव्य शैलियां –
 - डिंगल – पिंगल शैली
 - जैन शैली, चारण शैली, संत शैली एवं लौकिक शैली

इकाई— 2. राजस्थानी व्याकरण

- i. राजस्थानी वर्णमाला
- ii. राजस्थानी की विशिष्ट ध्वनियां
- iii. राजस्थानी व्याकरण : सामान्य ज्ञान – संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, अविकारी शब्द (अव्यय), समास, उपसर्ग, प्रत्यय, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, शब्द युग्म, अनेकार्थी शब्द, तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्द
- iv. शब्द-कोश-लेखन परम्परा

इकाई— 3. राजस्थानी साहित्य – काल विभाजन एवं रूप-परम्परा

i. काल-विभाजन –

- प्राचीन काल – सामान्य परिचय
- मध्यकाल – सामान्य परिचय
- आधुनिक काल – सामान्य परिचय

ii. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य के प्रकार एवं काव्य व गद्य-रूप-परम्परा –

- काव्य के प्रकार : प्रबन्ध काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य), मुक्तककाव्य
- काव्य-रूप – रासो, वेलि, फागु, पवाड़ा, बारहमासा, सिलोका, संधि, विवाहलो, स्तवन, हीयाळी, चरित
- गद्य-रूप — बात, ख्यात, विगत, वचनिका, दवावैत, बालावबोध, टीका, टब्बा, वंशावली, गुर्वावली, पट्टा

इकाई— 4. प्राचीन राजस्थानी साहित्य

i. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ii. प्रमुख प्रवृत्तियां

iii. प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएं – वर्गीकरण, विषयवस्तु एवं विशेषताएं

इकाई— 5. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य

i. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ii. प्रमुख प्रवृत्तियां – वीर, भक्ति, शृंगार, नीति, रीति, प्रेमाख्यान एवं प्रकृति परक

iii. प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएं – वर्गीकरण, विषयवस्तु एवं विशेषताएं

iv. प्रमुख संत सम्प्रदाय – नाथ-सिद्ध, गूढ़-पंथ, विश्वोई सम्प्रदाय, दादू पंथ, रामस्नेही, जसनाथी, चरणदासी, लालदासी, निरंजनी, आई पंथ एवं जैन सम्प्रदाय

इकाई— 6. आधुनिक राजस्थानी काव्य

- i. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- ii. प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएं – वर्गीकरण, विषयवस्तु एवं विशेषताएं
- iii. राष्ट्रीय चेतना परक एवं वीर काव्य
- iv. प्रगतिवादी काव्य
- v. प्रकृति-परक काव्य
- vi. नई कविता
- vii. हास्य एवं व्यंग्य प्रधान काव्य
- viii. मानवतावादी काव्य
- ix. अनूदित काव्य

इकाई— 7. आधुनिक राजस्थानी गद्य

- i. प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएं – वर्गीकरण, विषयवस्तु एवं विशेषताएं
- ii. कहानी
- iii. उपन्यास
- iv. नाटक
- v. एकांकी
- vi. निबंध
- vii. संस्मरण एवं रेखाचित्र
- viii. अन्य विधाएं : हास्य-व्यंग्य, आत्मकथा, आलोचना, यात्रा-वृत्तांत, रिपोर्ताज, अनूदित गद्य एवं गद्यगीत

इकाई— 8. राजस्थानी लोक-साहित्य : विविध विधाएं

- विषयवस्तु, वर्गीकरण एवं विशेषताएं—
 - i. राजस्थानी लोकगीत
 - ii. राजस्थानी लोककथा
 - iii. राजस्थानी लोकगाथा
 - iv. राजस्थानी लोक नाट्य

v. राजस्थानी लोकोक्ति साहित्य, कहावतें, मुहावरे एवं पहेलियां

इकाई— 9. राजस्थानी लोक संस्कृति : सामान्य परिचय

- i. राजस्थानी लोकोत्सव – पर्व, मेले, तीज-त्यौहार
- ii. राजस्थानी लोक देवी-देवता
- iii. राजस्थानी लोककलाएं – मांडणा, मेंहदी, सांझी, फड़, हस्तशिल्प
- iv. राजस्थानी चित्रकला – विभिन्न शैलियां एवं चित्रकार
- v. राजस्थानी स्थापत्य कला-विभिन्न शैलियां एवं शिल्पकार
- vi. राजस्थानी लोक नृत्य-प्रकार एवं कलाकार
- vii. राजस्थानी लोक वाद्य
- viii. राजस्थानी-संस्कार, रीतिरिवाज, खान-पान, वेशभूषा एवं आभूषण
- ix. राजस्थानी लोक विश्वास एवं शकुन
- x. राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति-सेवी संस्थाएं
- xi. राजस्थानी पत्र-पत्रिकाएं एवं पुरस्कार

इकाई— 10. राजस्थानी काव्य-शास्त्र

- i. राजस्थानी साहित्य के प्रमुख लक्षण ग्रंथ— सामान्य परिचय
- ii. काव्य-शास्त्र के प्रमुख सिद्धांत – रस सम्प्रदाय, अलंकार सम्प्रदाय एवं ध्वनि सम्प्रदाय
- iii. शब्द शक्ति
- iv. छंद – दोहा, सोरठा, गीत, कुण्डलिया, छप्पय, नीसांणी, चौपई, झमाल, झूलणा, रेणुकी, कवित्त, चित्त इलोळ
- v. अलंकार – वयणसगाई, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति, व्याजस्तुति, अन्योक्ति, संदेह एवं भ्रांतिमान
- vi. काव्य-दोष – अंध, छबकाळ, हीण, निनंग, पांगळौ, जातविरोध, अपस्, नाळछेद, पखतूट, बहरौ, अमंगळ